Vol 5 Issue 10 Nov 2015

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850

Impact Factor : 3.1560(UIF)
Volume - 5 | Issue - 10 | Nov - 2015

"समकालीन महिला कथाकारों की दृष्टि में सामाजिक समस्याएँ"

ललिता रानी
सहायक प्राध्यापक हिन्दी , बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फिरोजाबाद (उ.प्र.)

सारांश :

हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री की पहचान को लेकर संघर्ष जारी है। स्त्री की अस्मिता को इस विन्दु तक लाने का श्रेय दृश्य माध्यमों और महिला आन्दोलनों को दिया गया है। अब भारतीय नारी ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण जगत की नारियाँ चुप नहीं रह सकतीं। आज नारी समाज ने चुप्पी तोड़ने का संकल्प ले रखा है। हिन्दी कथा साहित्य में इसी संकल्प को लेकर लेखिकाएँ नए विकल्पों का सृजन कर रही हैं। स्वातंत्र्योत्तर भारत में जब संयुक्त परिवारों का विघटन होने लगा तो स्त्री–पुरुष सम्बन्धों में एक नया मोड़ देखने को मिला। विशेषकर पाश्चात्य नारी–मुक्ति आन्दोलन ने भारतीय नारी समाज को भी प्रभावित किया एवं खण्डित स्त्री–पुरुष सम्बन्धों की एकाधिक त्रासदियाँ समाज में देखने को मिली।

मुख्य शब्द – समकालीन महिला कथाकार, सामाजिक समस्याएँ एवं महिला आन्दोलन।

प्रस्तावना :

समकालीन स्त्री-कथाकारों के दृष्टिकोण, उनके रचनात्मक सामर्थ्य, उनके सरोकार और विचार-जगत से सक्रिय और गंभीर रूप से जुड़े लोगों के लिए विचार-विमर्श का आधार बन सकता है। निष्कर्ष रूप में इतना अवश्य है कि समकालीन महिला-कथाकारों ने अपनी सीमाओं के बावजूद अपनी कथा-रचनाओं के माध्यम से जिन कई प्रश्नों से साक्षात्कार करना चाहा है, वे आधुनिक भारतीय समाज और उसके संकटों से जुड़े प्रश्न हैं। अधिकांश मामलों में उनकी रचनाओं में उजागर स्त्री हमारे समय की ठोस और वास्तविक स्त्री है। उनकी भौतिक और भावात्मक उपस्थिति को, उसकी आत्म-सजगता को, उसकी नियति को, उसके आत्म-संघर्ष को, उसकी अस्मिता और मुक्ति की चेतना को हमारे युग की जटिलताओं के संदर्भ में जानने और समझने का जो प्रयास किया है- वह हमारे सजग अहसास व विचार-विमर्श का आधान बनना जरूरी है।[1]

मैत्रेयी पुष्पा व ऋता शुक्ल जैसी लेखिकाएँ महानगरों की तुलना में सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से अविकसित और पिछड़े कस्बाई और ग्रामीण अंचलों के परिवेश को अपनी रचनाओं का आधार बनाती हैं, उनमें कई रूपों व स्तरों पर हो रहे परिवर्तनों को लक्ष्य करती हैं तथा इन परिवर्तनों के सापेक्ष अपने सामान्य स्त्री-पात्रों को उनकी शक्ति और गरिमा के साथ प्रस्तुत करती हैं। मैत्रेयी पुष्पा के नारी पात्र न केवल स्वयं को परिस्थितियों-भाग्य और नियति के सम्मुख समर्पण करने से इंकार करते हैं, वरन् संकल्प और साहस के साथ अपने निर्णय के साथ खड़े भी होते हैं। कहानी लेखिका स्त्री की भूमिका को सामाजिक बदलाव से संदर्भित करने का प्रयत्न करती है।[2]

उड़िया कथा-लेखिका यशोधरा मिश्र की कहानी 'सेतु' (हंस : जून/जुलाई, १९९८) एक ओर उस प्रौढ़ स्त्री की तस्वीर हमारे सामने रखती है जो परनिर्भरता (पति पर निर्भरता) में सामाजिक जकड़न की शिकार है। वह अपनी पारिवारिक सुविधा- सुरक्षा के प्रति सशंकित और डरी हुई स्त्री है। पति की अहंवादिता उस पर इस तरह हावी है कि अपनी इच्छा से दूसरों के साथ सहज मानवीय व्यवहार का निर्वाह करना भी उसके लिए दुष्कर है। किन्तु दूसरी ओर यह कहानी, सामंती संस्कारों में पली-बढ़ी, आर्थिक दृष्टि से सुरक्षित और सुविधा प्राप्त मध्यम-वर्गीय स्त्री के बदलते सोच को भी रेखांकित करती है।

यह प्रौढ़ स्त्री नई पीढ़ी की स्त्री के खुलेपन, उसकी आत्मनिर्भरता, उसके अपने ढंग से रास्ते की खोज और जीवनयापन के तरीके, मानसिक बदलाव को कहीं आकर्षण और मुग्धता और कहीं प्रशंसा व समर्थन के भाव से देखती हैं।

और इस प्रकार अपनी एक ढर्रे पर चलती-घिसटती तथा प्रचलित सामाजिक रूढ़ियों से ग्रस्त जिंदगी की विडम्बना और असहायता को तीखे रूप में प्रश्नांकित भी करती हैं।[३]

विश्लेषण –

समकालीन महिला-कथाकारों ने अपनी सीमाओं के बावजूद अपनी कथा-रचनाओं के माध्यम से जिन कई प्रश्नों से साक्षात्कार करना चाहा है, वे आधुनिक भारतीय समाज और उसके संकटों से जुड़े प्रश्न हैं। अधिकांश मामलों में उनकी रचनाओं में उजागर स्त्री हमारे समय की ठोस और वास्तविक स्त्री है। उसकी भौतिक और भावात्मक उपस्थिति को, उसकी आत्म-सजगता को, उसकी नियति को, उसके आत्म-संघर्ष को, उसकी अस्मिता और मुक्ति की चेतना को हमारे युग की जटिलताओं के संदर्भ में जानने और समझने का प्रयास किया है।

इस प्रकार की अधिकांश कथा-रचनाओं में स्त्री भले ही प्रमुख और जीवंत पात्र हो-उससे सम्बन्धित पुरुष-पात्र की स्थिति गौण और बहुत कमजोर होती है। अधिकांश पुरुष-पात्र बहुत हद तक सामान्यीकृत आकृतियों में बदलने लगे हैं, उनकी जीवंत ऐन्द्रिकता का उसी अनुपात में विलोपन हो रहा है। स्त्री-पात्र स्वयं अपने को कभी सामंती मूल्यों और आदर्शों के ऊपर विरोध और अस्वीकार से जोड़ती हुई अंततः उन्हीं मूल्यों/आदर्शों का आश्रय लेती है तो कभी परम्परागत ढाँचे में स्वयं को सीमित करती हुई यांत्रिक और कामचलाऊ ढंग से अपने सम्बन्धित पुरुष-पात्र (पात्रों) के आचरण और व्यवहार की असंगतियों पर अपना ध्यान अधिक केन्द्रित करती है।

'हंस' के किसी अंक के सम्पादकीय में एक अन्य संदर्भ को उठाते हुए राजेन्द्र यादव ने इस प्रकार के एकांगी और एक-पक्षीय दृष्टिकोण के विरुद्ध जो टिप्पणी की है, वह महत्वपूर्ण है।

''यह 'अपनी ही साइकी' क्या है? यह आसमान से उतरी है या धीरे-धीरे विकसित हुई है और इसे ढालने में 'औरों' का भी कुछ योगदान है? वे 'दूसरे' कौन हैं जो बोध और चेतना बनकर हमारे भीतर उतर आए हैं? अगर दूसरे हमारे नर्क हैं तो हम दूसरों के लिए क्या हैं? जो कुछ भी हमने 'ग्रहण' किया है वह सब 'विदेशी' और 'विधर्मी' नहीं हैं? अपनी पहचान' या 'आत्म-साक्षात्कार' के नाम पर स्वतंत्र और स्वाधीन होते चले जाने की यह झख या तो हिन्दू मोझ तक जाती है या अस्तित्ववादी आत्महत्या तक। नहीं, बंधु नहीं, हम तभी तक हैं जब तक 'दूसरे' हैं या कहें कि 'दूसरे' हैं, इसलिए हम हैं।''[४]

नारी कथाकारों ने समकालीन परिवेश में स्त्री-समाज की त्रासदी और विडम्बना, उसकी शोषित स्थिति, उसकी सामाजिक-आर्थिक पराधीनता, सदियों से चले आते स्त्री-सम्बन्धों, सामंती मूल्यों, रूढ़िग्रस्त मान्यताओं और धारणाओं से जुड़े प्रश्नों को खुले, तीखे व साहसपूर्ण ढंग से अपनी कहानियों के माध्यम से हमारे सामने रखा है।

वरिष्ठ और प्रसिद्ध कथा-लेखिकाओं-ऊषा प्रियंवदा, मन्नू भण्डारी, कृष्णा सोबती, ममता कालिया, अनीता राकेश इत्यादि से लेकर इधर पिछले लगभग दो दशकों के दौरान कथा-रचना के क्षेत्र में अधिक सक्रिय और चर्चित मंजुल भगत, मृदुला गर्ग, मालती जोशी, नासिरा शर्मा, मेहरुन्निसा परवेज, राजी सेठ,सूर्यबाला, शशि प्रभा शास्त्री, चंद्रकांता, अर्चना वर्मा, डॉ. प्रभा खेतान, मृणाल पांडे, अनामिका, डॉ. कमल कुमार, मैत्रेयी पुष्पा, सीतेश आलोक, स्व. सुमति अय्यर, गीतांजलि श्री, कात्यायनी, क्षमा शर्मा, तरसेम गुजराल, ऋता शुक्ल इत्यादि महिला कथाकारों की एक लम्बी परम्परा है। जिन्होंने अपनी रचनाओं में ऐसे स्त्री-पात्रों को प्रमुखता दी है जो अपनी स्वतंत्र सोच रखती हैं, जो अपनी आँखों से जिंदगी के अँधेरे-उजले पक्षों और विस्मृत कोनों को देखती है, मानवीय रिश्तों के तमाम उलझे पृष्ठों को खोलने का प्रयत्न करती हैं, अपने स्त्री-वर्ग पर थोपे गए व सदियों से चले आते विभिन्न प्रकार के मिथकों व नैतिक-धार्मिक मान्यताओं की असामयिकता, व्यर्थता व जड़ता का खुलासा करती हैं।

जर्मेन ग्रीयर ने लिखा है कि एक जमाना था जब साथ-सुथरेपन में कमी पर आधारित गालियाँ दी जाती थीं। यही निन्दा की भाषा थी। साफ-सुथरेपन की ढिलाई को नैतिक ढिलाई के समतुल्य माना जाता था जबकि धूल-मिट्टी और लैंगिक अशुचि के प्रभाववश भाषा में फूहड़पन की अवधारणा आई। कालांतर में फूहड़पन से जुड़े पुरुषवाची आयाम गायब हो गए और उन्हें सिर्फ स्त्रियों तक सीमित कर दिया गया।[५]

प्रभा खेतान के शब्दों में, ''व्यक्तिगत स्तर पर भारतीय स्त्रियों ने अपनी-अपनी लड़ाइयाँ लड़ी हैं, किन्तु अब तक यह बाकायदा आंदोलन के रूप में अपनी अलग पहचान नहीं स्थापित कर सकी हैं। समकालीन नारीवाद एक बहुआयामी प्रयास है और अभी तक स्त्री-पुरुष के लैंगिक विभाजन पर आधारित कोई स्पष्ट विभेद सभ्यता के क्षितिज पर प्रकट नहीं हुआ है। विभिन्न सैद्धांतिक आग्रहों के कारण नारीवाद की अलग-अलग आवाजें अलग-अलग मुद्दों पर ज्यादा मुखरित हुई हैं। इन उठाए गए मुद्दों को नाम देना जरूरी है।

स्त्री के खिलाफ घटी हुई घटनाओं पर चटखारे लेना अपने-आपमें पुरुष मानसिकता का कुत्सित आचरण ही कहा जाएगा। इसके बावजूद नारीवाद जिस संस्कृति को जन्म दे रहा है, उसका विश्लेषण भी अनिवार्य है। अन्य सभी सांस्कृतिक साँचों की तरह नारीवाद लिंग पर आधारित विभाजन के विभिन्न तत्वों की जटिलता-जैसे बौद्धिक, मानसिक, सामाजिक तथा संस्थागत संरचना को केवल स्त्री-पुरुष जैविक भिन्नता पर आधारित नहीं कर सकता। स्त्री कहीं सवर्ण पुरुषों की सर्वसत्तावादी मानसिकता का भी शिकार हुई हैं, इसे भी स्पष्ट करना होगा।''[६]

भारतीय संस्कृति और सामाजिक रूपरेखा की सीमाओं में पनपता हुआ नारीवाद स्वयं अपनी सांस्कृतिक और संज्ञानात्मक व्यवस्था के आधार को ही चुनौती देता है। भारतीय दर्शन की परम्परा जब मानवीय समस्या के निदान के रूप मं अनुभवातीत सत्य की ओर संकेत करती है, तो लगता है कि भारतीय दर्शन में व्यष्टि से अधिक महत्व वस्तुकरण का है। वस्तुकरण की इस प्रवृत्ति ने कम-से-कम स्त्रियों के लिए तो कहीं कोई उदारता नहीं बरती। ज्ञान की प्रणाली से उद्भूत स्त्री भी ज्ञान की विषय-वस्तु ही बनी।

समकालीन नारीवादियों ने जब एक नए दृष्टिकोण से दुनिया को देखना शुरू किया तब उन्हें समझ में आया कि स्त्री को वर्गीय दलन की अधीनस्थ स्थिति से अलग रखा जाना चाहिए। स्त्री और पुरुष की असमानता महज पूँजीवाद की उपज नहीं। विश्वसनीय खोजों पर आधारित तथ्यों के अनुसार यह एक सामाजिक घटना है प्रत्येक जाति और समाज से सम्बन्धित है।

निष्कर्ष –

उपरोक्त से स्पष्ट होता है कि आज के समय में स्त्री-विमर्श साहित्यिक, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्तर पर उभरा एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। यह ठीक है कि स्त्री-विमर्श नाम ही आज प्रासंगिक नहीं लगता। फिर भी इसमें गहराई में न जाकर इससे उभरे मुद्दों पर भी अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे। सर्वप्रथम यह प्रश्न उठता है कि कानूनी रूप से पर्याप्त संपन्न दुनिया के इस आधी आबादी को क्या वह स्थान मिला है, जिसकी वह हकदार है। निश्चित रूप से आज स्त्री की जगह वही नहीं है जो आदिम साम्यवादी या सामंती समाज में था। सामाजिक परिवर्तन के साथ-साथ जैसे-जैसे मानवता का विकास हुआ है, स्त्री की स्थिति में भी परिवर्तन हुआ है।

संदर्भ –

१.समकालीन महिला-कथाकारों में स्त्री-चेतना, पृष्ठ ८६, अम्बिका सिंह वर्मा.
२.स्त्री अस्मिता : साहित्य और विचारधारा, पृष्ठ २२३, सम्पादक जगदीश्वर चतुर्वेदी.
३.स्त्री अस्मिता : साहित्य और विचारधारा, पृष्ठ २१६, सम्पादक जगदीश्वर चतुर्वेदी.
४.हंस का सम्पादकीय अंश, पृष्ठ २, राजेन्द्र यादव.
५.स्त्री-विमर्श के नए आयाम, पृष्ठ ३८६, जगदीश्वर चतुर्वेदी.
६.स्त्री-विमर्श के अंतर्विरोध, पृष्ठ ३४१, प्रभा खेतान.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org